Date 9/7/21
Page

पाठ :- तुम कब जाओगे, अतिथि।

पाठ का सार।

लेखक के घर पर एक अतिथि चार दिनों से रह रहा है जिसे ~~देखकर~~ देखते हुए वे कहते हैं कि हे अतिथि !! तुम्हें देखते ही मेरा बटुआ काँप गया था। फिर भी हमने भरसक मुस्कान के साथ तुम्हारा स्वागत किया था। ~~रात~~ रात के भोजन को मध्यम वर्गीय डिनर जैसा भारी-भरकम बना दिया था। सोचा था कि तुम सुबह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ। तुम यहाँ आराम से सिगरेट के छल्ले उड़ा रहे हो उधर मैं तुम्हारे सामने कैलेण्डर की तारीखें बदल-बदलकर तुम्हें जाने का संकेत दे रहा हूँ। तीसरे दिन तुमने कपड़े धुलवाने की फ़रमाइश की। कपड़े धुलकर आ गए लेकिन तुम नहीं गए। पत्नी ने सुना तो वह भी आँखें तरेरने लगी। चौथे दिन कपड़े धुलकर आ गए, फिर भी तुम डटे हुए हो। बातचीत के साथ विषय समाप्त हो गए हैं। अब भोजन में खिचड़ी

Date 9/3/21
Page

बनने लगी है। घर को स्वीट होम कहा गया है, पर तुम्हारे होने से घर का स्वीटनेस खत्म हो गया है। अब तुम चले ~~जाओ~~ जाओ वर्ना मुझे, 'गेट आउट' कहना पड़ेगा। मन ही मन लेखक सोचते रहे, 'तुम कब जाओगे, अनिधि?'

"दूर के ढोल सुहाने !!!"